परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी विचारसम्पदा : खण्ड २

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

श्री. चेतन धनंजय राजहंस

(प्रवक्ता, सनातन संस्था)

सनातन संस्था

सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

मार्च २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९६ लाख ३१ सहस्र प्रतियां !

卐 सनातनकी गुरुपरम्परा 卐

प.पू. भक्तराज महाराजजी, इंदौर, मध्य प्रदेश.

डॉ. आठवलेजीके गुरु एवं सनातन संस्थाके श्रद्धास्रोत

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी

सनातन संस्थाके संस्थापक

श्रीसत्‌शक्ति

(श्रीमती) बिंदा सिंगबाळजी

श्रीचित्‌शक्ति

(श्रीमती) अंजली गाडगीळजी

(सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणियां)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २०.३.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

७. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

ग्रन्थके संकलनकर्ताका परिचय

श्री. चेतन राजहंस (प्रवक्ता, सनातन संस्था)

'सनातन धर्मवीर'की उपाधिसे सम्मानित हैं तथा दूरदर्शन वाहिनियोंपर हिन्दू धर्मका पक्ष रखते हैं । सनातन के ग्रन्थोंका संकलन एवं हिन्दू-संगठन हेतु यात्रा करते हैं। गोवामें होनेवाले 'अखिल भारतीय हिन्दू राष्ट्र अधिवेशन' के आयोजनमें आपका सक्रिय सहभाग रहता हैं ।

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियोंने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओंमें भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओंके वाचनके माध्यमसे महर्षि सनातन संस्थाका मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका'के वाचन के माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहलेके लेखनमें अथवा अब भी साधकोंद्वारा दिए लेखनमें उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी उत्तराधिकारिणियोंकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचनद्वारा सप्तर्षियोंने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजीको 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है ।

भूमिका

हिन्दू धर्म और भारतवर्षकी विशेषता यह है कि यहां भविष्यमें होनेवाली अद्वितीय घटनाएं होनेसे पहले ही लिख दी जाती हैं । वाल्मीकि ऋषिने अलौकिक प्रतिभादृष्टिके बलपर पहले रामायणकी रचना की । तदुपरांत प्रभु श्रीरामका अवतार हुआ और ऐतिहासिक 'रामराज्य' पृथ्वीपर अवतरित हुआ। भगवान श्रीकृष्णके जन्मसे पूर्व भी दैवी आकाशवाणी हुई थी । आगे आकाशवाणी सत्य सिद्ध हुई और ईश्वरने भगवान श्रीकृष्णके रूपमें अवतार लेकर धर्मकी संस्थापना की । जिससे पृथ्वीपर पुनः 'धर्मराज्य' स्थापित हुआ। अध्यात्मके अधिकारी व्यक्ति परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने सर्वप्रथम वर्ष १९९८ में अपनी दूरदृष्टिके आधारपर यह विचार प्रस्तुत किया था कि 'भारतमें वर्ष २०२३ से वर्ष २०२५ की अवधिमें 'ईश्वरीय राज्य' अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित होगा।' तबसे वे निरन्तर 'हिन्दू राष्ट्र' विषयपर वैचारिक और आध्यात्मिक स्तरके लेख लिख रहे हैं । इन विचारोंमें आगामी कुछ वर्षोंमें स्थापित होनेवाले आदर्श राष्ट्ररचनाके, अर्थात धर्मसंस्थापनाके बीज हैं । हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनासे सम्बन्धित कोई भी आशादायी घटना स्थूलरूपमें होती दिखाई नहीं दे रही । ऐसेमें 'हिन्दू राष्ट्र'के विषयमें बोलना, किसी-किसी को अतिशयोक्ति लग सकती है; परन्तु कालके पदचाप पहले ही सुन लेनेवाले सन्तोंने, हिन्दू राष्ट्ररूपी उज्ज्वल भविष्य देख लिया है । उस दिशामें प्रयत्न करना, हमारी साधना है ।

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने समय-समय पर 'हिन्दू राष्ट्र' के विषयमें लिखे लेखोंमें जो विचार प्रस्तुत किए हैं, उनमेंसे केवल हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाको दिशा देनेवाले विचारोंका ही इस ग्रन्थमें समावेश किया गया है । यह ग्रन्थ परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके विचारोंका संग्रह है, जिसमें उनके त्वरित और विषयबद्ध दोनों प्रकारके लेख हैं । 'हिन्दू राष्ट्र' शब्दकी व्याख्या अनेक विचारवेत्ताओंने भूगोल, इतिहास, संस्कृति तथा दर्शन के आधारपर की है । परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने 'हिन्दू राष्ट्र' विषयको आध्यात्मिक दृष्टिसे प्रस्तुत किया है । यह ग्रन्थ पढनेपर सहज ही ध्यानमें आएगा कि विश्वकल्याणकी व्यापक आध्यात्मिक शिक्षा देनेवाले भारत

सहित सम्पूर्ण पृथ्वीपर 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित करना, एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है ।

वीर सावरकर, प्रथम सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार, पूज्य गोळवलकर गुरुजी आदि महान पुरुषोंने भी हिन्दू राष्ट्रका विचार प्रखरतासे समाजके सामने रखा । दुर्भाग्यसे स्वयम्भू भारतवर्ष, स्वाधीनताके पश्चात 'धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र' बन गया । जिससे 'हिन्दू राष्ट्र' नामक तेजस्वी संकल्पना छिप गई । जहां 'रामराज्य' प्रत्यक्ष अवतरित हुआ था, वहीं आज इसे दन्तकथा कहा जा रहा है । छत्रपति शिवाजी महाराजद्वारा स्थापित 'हिन्दवी स्वराज्य' को अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र'को लोगोंकी स्मृतिसे हटाया जा रहा है और 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' के नामपर उसे 'हरा रंग' देनेका प्रयास किया जा रहा है । इतना ही नहीं, जानबूझकर दुष्प्रचार किया जा रहा है कि हिन्दू राष्ट्र 'धर्मान्धता' है। इस धर्मनिरपेक्षताके कारण देशके सामने असंख्य समस्याएं उत्पन्न हुई हैं और हो रही हैं; तब भी धर्मनिरपेक्षताके प्रति अंधविश्वास रखनेवाले लोगोंकी इच्छा है कि भारत 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' ही बना रहे । इनके लिए 'हिन्दू राष्ट्र' का विषय ही निरर्थक है । उन्हें पता ही नहीं है कि प्रश्न 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' अथवा 'हिन्दू राज्य' ऐसा नहीं; अपितु आगामी कुछ वर्षोंमें उत्पन्न होनेवाला 'इस्लामी राज्य' अथवा 'हिन्दू राज्य', यह वास्तविक प्रश्न है । इस स्थितिमें केवल हिन्दू-संगठन करनेवाली विचारधारा ही इस देशकी रक्षा एवं हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना कर सकती है । हिन्दू राष्ट्रकी आकांक्षा पूरी होनेके लिए हिन्दू समाजके हिन्दू राष्ट्र-सम्बन्धी विचार, उच्चार और आचार एक होने चाहिए । इसीलिए 'हिन्दू समाजके विविध घटक, उदाहरणके लिए हिन्दू संगठन, सम्प्रदाय, सन्त, अधिवक्ता, विचारक आदि को 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापनाके लिए क्या करना चाहिए', इसका मार्गदर्शन इस ग्रन्थमें किया गया है ।

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके प्रेरणादायी विचारोंसे स्फूर्ति लेकर हम आगामी कालमें हिन्दू समाजको रामराज्यकी अनुभूति प्रदान करनेवाला 'हिन्दू राष्ट्र' भारतभूमिमें स्थापित कर पाएं, इसमें गिलहरी समान अल्प

नहीं; अपितु हनुमानजी समान अधिकतम योगदान देनेकी प्रेरणा हममें उत्पन्न हो और इसके आधारपर यह महान कार्य करनेके लिए हम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक स्तरपर अथक परिश्रम कर पाएं, यह प्रभु श्रीरामके चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका !

हिन्दी भाषामें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ । इससे उसकी सात्त्विकता घट जाती है । संस्कृत भाषा देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्ह जोडती है । वर्तमान कालका उदाहरण लें, तो अंग्रेजी भाषामें भी बिन्दुका प्रयोग नहीं किया जाता; तथापि पूरे संसारमें इस भाषाके प्रयोगमें कोई बाधा नहीं आती ।

''कारकचिन्हको धातुसे जोडना ही उचित है ! संस्कृतमें 'रामस्य धनुष्यः' लिखते हैं । इसलिए 'रामका धनुष' ही उचित है । 'राम का धनुष' लिखनेका अर्थ है, रामको धनुषसे अलग करना ! रामका धनुष उनके साथ ही होना चाहिए !''

– डॉ. लालचंद तिवारी, एक प्रमुख अधिकारी, 'गीता प्रेस' गोरखपुर

संस्कृत भाषासमान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्तिको इसका आचरण कर 'स्व-भाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाना चाहिए !

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

'सनातन संस्थाके संस्थापक सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीके विचार ब्राह्मतेज एवं क्षात्रतेज को वृद्धिंगत करते हैं !' – **श्रीमद् जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्रीमद् गंगाधरेंद्र सरस्वती महास्वामी, स्वर्णवल्ली मठ, कर्नाटक.**

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।)

अध्याय १ : 'हिन्दू राष्ट्र' : मूलभूत विचार १०

अध्याय २ : हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी दृष्टिसे साधनाका महत्त्व १९

* धर्माचरणी हिन्दू ही 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित कर सकते हैं ! १९

अध्याय ३ : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनामें ब्राह्मतेजका महत्त्व ३०

अध्याय ४ : हिन्दू राष्ट्रके निर्माणमें सूक्ष्म स्तरीय 'देवासुर संग्राम' ! ३५

अध्याय ५ : हिन्दू राष्ट्र-स्थापना हेतु साम्प्रदायिक एकता चाहिए ! ४२

* सभी सम्प्रदायोंके निःस्वार्थी और अहंकाररहित अनुयायियों द्वारा हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना सम्भव ! ४२

अध्याय ६ : हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनोंके हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु मिलकर कार्य करनेकी दिशा ! ४४

* उग्र और सौम्य विचारके संगठन परस्पर पूरक कार्य करें ! ४७

अध्याय ७ : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनामें विचारकोंका महत्त्व ४८

अध्याय ८ : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका प्रत्यक्ष कार्य ५२

अध्याय ९ : हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके भविष्यकालीन कार्यकी दिशा ६२

अध्याय १० : हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके कार्यमें सम्मिलित हों ! ६६

* 'भारतमें हिन्दू राष्ट्र स्थापित करना' पहला चरण तथा 'पूरे विश्वमें हिन्दू धर्मका प्रसार करना' अन्तिम चरण ! ६८

टिप्पणी ग्रन्थके प्रत्येक विचारके अन्तमें कोष्टकमें दिनांक / वर्ष दिया गया है । परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने सम्बन्धित विचार उस दिन लिखे हैं ।